गरम कोट की तलाश मेः विनोद कुमार शुक्ल

आशीष कुमार गुप्ता
सहायक शिक्षक पंचायत
शा.उ.मा.विद्यालय भंवरमाल
रामानुजगंज (छ0ग0)

ऐसी वाक्य रचना जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो जाए वही काव्य है। दूसरे शब्दों में, सरसता का भाव लिए हुए पद्यात्मक और लयात्मक साहित्य रचना काव्य कहलाता है जबकि गद्य एवं पद्य की वे समस्त पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य और मानवभाव बुद्धिमता तथा व्यापकता से प्रकट किये गये हों तथा जिसमें समाज के हित की बात वर्णित हो वह साहित्य है। छत्तीसगढ़ी काव्य साहित्य अत्यन्त समृद्ध व उन्नत है। आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रमुख युगों में छायावादी युग के प्रमुख जनक और कवि मुकुटधर पाण्डे तथा हिन्दी की पहली कहानी 'टोकरी भर मिट्टी' के लेखक पं. माधवराव सप्रे से लेकर अभी तक अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी रुचि तूलिका से गद्य और पद्य की विधा को सजाया और सँवारा है।

समकालीन समय का छत्तीसगढ़ी काव्य विपुलता से युक्त है। एक साथ दर्जनों कवि इस समय अपने अन्तर्मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करके साहित्य को समृद्धि प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कविगण इस समकालीन साहित्य में अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्वरूप को व्यक्त कर रहे हैं। समकालीन समय के अनेक रचनाकारों की सूची में अगर कोई सबसे जाना पहचाना और चर्चित नाम यदि है तो वह है– विनोद कुमार शुक्ल, जिन्होने समकालीन छत्तीसगढ़ी कवि के साथ–साथ आधुनिक हिन्दी कविता के बड़े हस्ताक्षरों में अपना नाम दर्ज कराया है। छत्तीसगढ़ की पृष्ठभूमि पर आधारित शुक्ल जी की कविताएँ यहाँ निवासरत आमजन के लिए लिखी गयी हैं। उनकी कविताएँ छत्तीसगढ़ के आमजन के प्रति सरोकार करती हुयी दिखायी देती हैं। शांत मिजाजी और भावुक कवि शुक्ल जी के मन मंदिर में लोक के प्रति गहरी आस्था है। वे लोक की पीड़ा के कवि हैं, लोक से कवि का गहरा नाता है। उनकी कविताओं में समकालीन छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति साफ–साफ दृष्टिगोचर होती है। कवि के ही शब्दों में– ''मेरा लिखा हुआ अगर उसकी कोई पृष्ठभूमि बनती है तो वह छत्तीसगढ़ी ही है। यह राज्य या भौगोलिक सीमा में नहीं है बल्कि एक छत्तीसगढ़ी के बारे में मैं कह रहा हूँ जिसमें पूरा संसार शामिल है। यह छत्तीसगढ़ी पर मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं कहीं की भी कविता लिखूँ पता नहीं कैसे उसकी पृष्ठभूमि में छत्तीसगढ़ ही होता है।''[01]

एक लोक कवि बेहद शालीन व भावुक प्राणी होता है। उसे लोक की पीड़ा सहन नहीं होती। उसे लोक की पीड़ा स्वयं की पीड़ा जैसे अनुभव होती है। 'वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह' कविता संग्रह की पहली कविता 'वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह' में कवि तत्कालीन समय में शोषक व शोषित की चर्चा प्रस्तुत करते हैं। कवि के मतानुसार जाड़े का मौसम है ऐसे मौसम में जिनके पास जाड़े से बचने के लिए गरम कोट है वह आसानी से अपने गंतव्य की ओर चला जा रहा है उसके मार्ग में कोई रूकावट नहीं लेकिन समाज का ही एक वर्ग जो शोषित है, समाज में भेदभाव के कारण पीड़ित है, जिसके पास जाड़े में गर्मी पाने का कोई साधन नहीं है वह शोषित रबर की चप्पल, जिसे जाड़े में पहनना और भी कष्टदायक होता है, गरम कोट पहिने व्यक्ति की तुलना में पिछड़ जाता है। सामान्य स्थिति में जाड़े के मौसम में ग्रामीणों को कष्ट होती है, यह कविता हर समय में प्रसंगानुकूल है। प्रस्तुत कविता में कवि खुद पीड़ित बनकर कहते हैं कि –

''वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह।
रबर की चप्पल पहिनकर मैं पिछड़ गया।
जाड़े में उतरे हुए कपड़े का सुबह छः बजे का वक्त

सुबह छः बजे का वक्त, सुबह छः बजे की तरह।''[02]

देश में लागू समानता के अधिकार पर भी कवि व्यंग्य करते है। वे कहते हैं कि यह समानता का अधिकार सिर्फ पन्नों में सिमट कर रह गया है। देश में चारों तरफ असमानता है। तत्कालीन समय या वर्तमान समय में भी अगर देखें तो यह मालूम होता है कि समाज में उच्च वर्ग और अत्यन्त साधारण वर्ग के बीच की खाई और बढ़ते ही जा रही है। उच्च वर्ग के रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, आचार विचार इत्यादि मध्यम वर्ग से या अत्यन्त साधारण वर्ग से काफी भिन्न हैं। ऐसे में हम समानता का अधिकार नियम को कैसे सराहेंगे। कवि कहते हैं कि समानता का अधिकार की बात तो दूर यहाँ तो आमजन अपना हिस्सा पाने को भी तरस रहा है। निम्नलिखित पंक्तियाँ इस बात की साक्ष्य हैं–

''मैं दीवाल के ऊपर
बैठा/ थका हुआ भूखा हूँ
और पास ही एक कौआ है
जिसकी चोंच में/ रोटी का टुकड़ा
उसका ही हिस्सा/ छीना हुआ है
सोचता हूँ/ कि हाय!
न मैं कौआ हूँ/न मेरी चोंच है–
आखिर किस नाक नक्शे का आदमी हूँ
जो अपना हिस्सा छीन नहीं पाता।''[03]

लोक कवि सदैव लोक से प्रभावित होता है या हम कहें कि उसके अन्तर्मन में लोक बसता है। 'बाजार की सड़क' कविता में कवि एक ऐसे ही व्यस्त लोक व्यक्ति की चर्चा करते हैं जिसे पढ़ने से ही लोक का वह दृश्य हमारे सामने स्पष्ट दिखायी देने लगता है। प्रस्तुत पंक्तियों में लोक की स्वाभाविकता और सहजता को बताया गया है–

''बाजार की सड़क/व्यस्त आदमी
और उसके दोनों हाथों/गंदा झोला
कहीं फटा/एक खाली दूसरा भरा।
जिसके अंदर/आलू भाजी गरम मसाले की पुड़िया
और मिर्चा/लाल या हरा।''[04]

कवि की कविताओं में लोक की सच्ची व स्वाभाविक आभा प्रतिबिम्बित होती है। गाँव व नगरों में निवासरत आमजन जिनकी जीविका दूसरों के घर काम करने से चलती है। अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए कृ तसंकल्पित ये महिलाएँ सुबह उठकर अत्यन्त तन्मयता से काम पर जाती हैं। यह क्षमता सिर्फ ग्रामीण, श्रमिक महिला में ही देखी जा सकती है। गाँव में इन महिलाओं को बुतकरिन (बुता/काम करने वाली) कहा जाता है। पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

''काम पर जाती हुई औरत
इतनी सामान्य कि औरत कम
औरत का दृश्य ज्यादा
मेरे देखते कम
सोचते ज्यादा दृश्य में
उस औरत के पीछे–पीछे जाने के लिए
एक लड़का लोहे के कंटीले तार को
रोता हुआ फाँद गया।
दूसरा तार के नीचे अधनंगा निकल गया।''[05]

इसी कविता के अगले क्रम में कवि ने एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत किया है जिसमें लोक की सहज सरल व एकदम स्वाभाविक महिला की सच्चाईपन का जिक्र है। साथ ही छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति भी प्रतिबिम्बित हो रही है।

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति यहाँ खान–पान के रूप में वर्णित है। आज भी यहाँ का आम जन रात के बचे हुए भात को सुबह होने पर उसमें पानी भिगोकर चटनी और मिर्च के साथ आनन्दपूर्वक खा लेता है पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

''बाप रे बाप!!
खराब दिन और खराब रातों के घूरे में
उगे हुए टमाटर के पौधे को भी
बर्तन माँजने वाली
मालकिन से पूछकर ले जाती है
कि आने वाले समय में
पानी बोरे बासी भात के साथ
टमाटर की चटनी अच्छी लगेगी
एक दो हरी मिर्च होगी
बहुत चरपरी होगी
या थोड़ी चरपरी होगी।''[06]

कवि की एक कविता है 'विचारों का विस्तार इस तरह हुआ' में परिश्रमशील लोक की चर्चा प्रस्तुत की गयी है। अपने देश का वह परिश्रमशील लोक जिसके सहारे या जिसके कंधे पर ही देश का विकास टिका हुआ है उस लोक की चर्चा यहाँ पर कवि ने की है। एक परिश्रमशील लोक के कठिन कार्य को कवि ने यहाँ पर चित्रित किया है–

''विचारों का विस्तार इस तरह हुआ–
जिस दिशा में/एक मरियल आदमी
मुरम खोद रहा/दिन भर से धूप में
पुरानी जंग खायी/लोहे जैसी मजबूत
मुरमी तपती जमीन से/उस आदमी के साथ
एक लड़का/आबादी जैसा ष्ूखा
उघारा दुबला/खुदी हुई मुरम को जो
घमेले में भरकर/बैलगाड़ी में डाल रहा।''[07]

कवि की एक प्रसिद्ध कविता है 'रायपुर बिलासपुर संभाग' इस कविता में कवि ने हमारे देश के विभिन्न प्रान्तों के आम जन को उनकी अपनी–अपनी संस्कृति के आधार पर दिखाने का अनूठा प्रयास किया है। देश के वृहद् भाग पर निवासरत लोक का अगर सच्चा स्वरूप व लोक की सहजता, सरलता व उनकी स्वाभाविकता देखनी हो तो कवि की इन पंक्तियों को पढ़कर घर बैठे लोक को देखा जा सकता है। पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

''स्टेशन पर भीड़/गाड़ी खड़ी हुई
झुंड देहाती पच्चासों का रेला
आदमी औरत लड़के लड़की
गंदे सब नंगे ज्यादातर
कुछ बच्चे रोते बड़ी जोर से
जुटे सटे एक दूसरे से इकट्ठे
कूड़े–कर्कट की गृहस्थी का सामान लाद
मोटरा, पोटली, ढिबरी, कंदिल
लकड़ी का छोटा सा गट्ठा
एक टोकनी में बासी की बटकी हंडी।''[08]

इस तरह हम देखते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता के बड़े हस्ताक्षरों में विनोद कुमार शुक्ल का नाम ससम्मान लिया जाता है। उनकी कविताओं में निहित छत्तीसगढ़ का लोक पूरे विश्व के लोक को व्यक्त करता है। आज भी

छत्तीसगढ़ के कुछ जिले विकसित होने का स्वप्न देख रहे हैं। वहाँ निवासरत आमजन के लिए शासन की महत्वाकांक्षी योजनाएँ भी जल्दी नसीब नहीं हो पाती हैं। उन आमजन के प्रति कवि अत्यन्त चिन्तित हैं। वे उनके सरोकार के लिए चिन्तनशील हैं। कवि की कविताओं में लोक अपनी पूरी स्वाभाविकता और सच्चाईपन के साथ चित्रित हुआ है।

संदर्भ–

1. मिश्रा डॉ. मुकेश कुमार – आधुनिक हिन्दी कविता के कुछ हस्ताक्षर खण्ड–1, इन्द्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली गोरखपुर, प्रथम संस्करणः 2013, पृ. 55
2. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़, शाहदरा दिल्ली, प्रथम संस्करणः 1981, पृ. 09
3. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, पृ. 18
4. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, पृ. 20
5. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, पृ. 70
6. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, पृ. 73
7. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, पृ. 108
8. शुक्ल विनोद कुमार – वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, पृ. 121–122

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com